[सूक्त-२५]

[ऋषि— शुनःशेप आजीगर्ति (कृत्रिम देवरात वैश्वामित्र)। देवता— वरुण। छन्द— गायत्री।]

२६९. यच्चि॒द्धि ते॒ विशो॑ यथा॒ प्र दे॑व वरुण व्र॒तम्। मि॒नी॒मसि॒ द्यवि॑द्यवि।।१।।

हे वरुण देव! जैसे लोक में प्रजाएँ कभी-कभी प्रमाद करती हैं, वैसे ही हम भी आपसे सम्बन्धित कर्म को (पूजा अर्चन) में प्रतिदिन प्रमाद से हिंसित करते हैं।

विशः—प्रजाएँ; **मिनीमसि**—प्रमाद से हिंसित करते हैं।

२७०. मा नो॑ व॒धाय॑ ह॒त्नवे॑ जिहीळा॒नस्य॑ रीरधः। मा ह॑णा॒नस्य॑ म॒न्यवे॑।।२।।

हे वरुण देव! अनादर करने वाले का वध करने के लिये, पापियों के हननरूपी शील वाले आपके हम लोग विषयभूत न हों तथा क्रुद्ध आपके क्रोध के लिए वधार्थ का हम विषय न बनें।

हत्नवे—पापियों के हनन रूपी शील वाले वरुण देव के लिये। **रीरधः**—संसिद्ध, **हणानस्य**—हणीयमान, क्रुद्ध।

२७१. वि मृ॑ळी॒काय॑ ते॒ मनो॑ र॒थीरश्वं॒ न सन्दि॑तम्। गी॒र्भिर्व॑रुण सीमहि।।३।।

हे वरुण देव! हम अपने सुख के लिए आपके मन को स्तुतियों से विशेष रूप से प्रसन्न करते हैं। जैसे रथ का स्वामी दूर जाने से श्रान्त अपने घोड़े को घासादि द्वारा प्रसन्न करता है।

संदितम्—सम्यक् खण्डित, थके हुए; **सीमहि**—बांधते हैं, प्रसन्न करते हैं।

२७२. परा॒ हि मे॒ विम॑न्यवः॒ पत॑न्ति॒ वस्य॑इष्टये। वयो॒ न व॑स॒तीरुप॑।।४।।

हे वरुण देव! मुझ शुनःशेप की क्रोधरहित बुद्धियाँ अतिशय मूल्यवान जीवन की प्राप्ति के लिए

दीनबन्धु दीनानाथ 8109201021

Scanned by CamScanner

दीनबन्धु दीनानाथ 8109201021

पुनरावृत्ति से रहित होकर दौड़ रही हैं। जैसे पक्षीगण अपने घोंसलों की ओर दौड़ते हैं।

विमन्यवः—क्रोधरहित बुद्धियाँ या उत्साहित बुद्धियाँ; **वस्यइष्टये**—अतिशय धनयुक्त जीवन के प्राप्त्यर्थ।

२७३. कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे। मृळीकायोरुचक्षसम्।।५।।

हम अपने सुख के लिए बल से युक्त, नेता तथा बहुतों के द्रष्टा वरुण को यहाँ इस कर्म में कब बुलायेंगे।

क्षत्रश्रियं—बल की सेवा करने वाले; **आकरामहे**—बुलायेंगे।

२७४. तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे।।६।।

व्रतधारण करने वाले हविर्दाता यजमान के लिये सुख की चाहना करने वाले मित्र और वरुण हमारे द्वारा दी गई हवि का समान भोग करते हैं तथा कभी भी प्रमाद नहीं करते हैं।

आशाते—भोग करते हैं; **वेनन्ता**—कामना करने वाले मित्र, वरुण।

२७५. वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम्। वेद नावः समुद्रियः।।७।।

अन्तरिक्ष में उड़ने वाले पक्षियों का मार्ग जो वरुणदेव जानते हैं, वे समुद्र में अवस्थित वरुण जल में संचार करने वाली नौकाओं का मार्ग भी जानते हैं (वह देव हमें बन्धन से मुक्त करे)

पततां—उड़ने वाले; **समुद्रियः**—समुद्र में स्थित वरुणदेव।

२७६. वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।।८।।

नियमानुसार चलने वाले वरुण देव, प्रजा से युक्त बारह महीनों (चैत्रादि) को जानते हैं तथा जो तेरहवाँ (अधिक मास) संवत्सर के समीप स्वयं उत्पन्न होता है, उसे भी जानते हैं।

प्रजावतः—उत्पद्यमान प्रजा से युक्त; **य उपजायते**—जो चान्द्र-सौर वर्ष का अधिकमास उत्पन्न होता है। इसकी अभिव्यक्ति अस्पष्ट है लेकिन पूर्ववर्ती 'वेद मासो द्वादश' के प्रसंग में है अर्थात् जो बारह महीनों को जानता है।

२७७. वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेदा ये अध्यासते।।९।।

जो वरुण देव विस्तीर्ण, दर्शनीय और गुणों में अधिक वायु के मार्ग को जानते हैं; तथा जो देवगण ऊपर स्थित हैं, उनका भी ज्ञान वे वरुणदेव रखते हैं।

ऋष्वस्य—दर्शनीय; **अध्यासते**—ऊपर अधिष्ठित।

२७८. नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्याऽ३स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।।१०।।

नियमानुसार चलने वाले तथा उत्तम कर्म करने वाले वरुण देव देवी प्रजाओं के मध्य प्रजाओं की साम्राज्य सिद्धि के लिये, आकर बैठ गये हैं।

पस्त्यासु—दैवी प्रजाओं में।

२७९. अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति। कृतानि या च कर्त्वा।।११।।

बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति वरुण के द्वारा ही सारे आश्चर्यों को, जो वरुण के द्वारा पहले कर दिये गये हैं या अन्य जो अभी किये जायेंगे, देखता है।

चिकित्वान्—प्रज्ञावान्; **कर्त्वा**—किये जाने वाले।

Scanned by CamScanner

२८०. स नो॑ वि॒श्वाहा॑ सु॒क्रतु॑रादि॒त्यः सु॒पथा॑ करत्। प्र ण॒ आयूं॑षि तारिषत्।।१२।।

शोभनप्रज्ञ या शोभनकर्म वह अदिति पुत्र वरुणदेव सर्वदा हमें शोभन मार्ग पर ले चलें तथा हमारी आयु की वृद्धि करें।

२८१. बिभ्र॑द्द्रा॒पिं हि॑र॒ण्ययं॒ वरु॑णो वस्त नि॒र्णिज॑म्। परि॒ स्पशो॒ नि षे॑दिरे।।१३।।

सुवर्णमय कवच को धारण करने वाले वरुण देव ने अपने पुष्ट शरीर को ढँक लिया है। जिससे हिरण्यस्पर्शी किरणें चारों ओर फैल गई हैं।

द्रापिं—कवच; **निर्णिजं**—पुष्ट शरीर; **स्पशः**—दूत, किरणें।

२८२. न यं दिप्स॑न्ति दि॒प्सवो॒ न दुह्वा॑णो॒ जना॑नाम्। न दे॒वम॒भिमा॑तयः।।१४।।

हिंसक वैरी जिस वरुण से भयभीत होकर हिंसा का गांव छोड़ देते हैं। वे प्राणियों से द्रोह करने वाले वरुण से द्रोह नहीं करते। पापीजन उस वरुण को स्पर्श भी नहीं कर पाते हैं।

दिप्सवः—हिंसक; **अभिमातय**—पापी "पाप्मा वा अभिमातिः" (तै. सं. २.१.३.५)

२८३. उ॒त यो मानु॑षे॒ष्वा यश॑श्च॒क्रे असा॒म्या। अ॒स्माक॑मु॒दरे॒ष्वा।।१५।।

और भी जिस वरुण ने मनुष्य के लिए अत्यधिक अन्न बनाया; वही वरुण सम्पूर्णतया सब कुछ करता है। विशेष रूप से हमारे पेट के लिए उसने अन्न बनाया है या हमारे पेट में भी सुन्दर रचना उसी ने की है।

यशः—अन्न; **असाम्या**—पूर्णरूपेण।

२८४. परा॑ मे यन्ति धी॒तयो॒ गावो॒ न गव्यू॑ती॒रनु॑। इ॒च्छन्ती॑रुरु॒चक्ष॑सम्।।१६।।

बहुत लोगों द्वारा द्रष्टव्य वरुण की इच्छा करने वाली मुझ शुनःशेप की बुद्धियाँ उसी के पास दूर तक जाती हैं, जैसे गायें गोचर भूमि या गोष्ठ की ओर जाती हैं।

गव्यूती—गोशाला, चरागाह।

२८५. सं नु वो॑चावहै॒ पुन॒र्यतो॑ मे॒ मध्वाभृ॑तम्। होते॑व॒ क्षद॑से प्रि॒यम्।।१७।।

जिस कारण से मेरी यह मधुर हवि अञ्जसवाख्य कर्म में मेरे द्वारा तैयार की गई है, अतः होमकर्त्ता के समान आप भी प्रिय हवि का भोग करें। हवि-स्वीकार होने के बाद तृप्त हुए आप और जीवनमुक्त मैं अवश्य ही मिलकर प्रिय वार्ता करेंगे।

२८६. दर्शं॒ नु वि॒श्वद॑र्शतं॒ दर्शं॒ रथ॒मधि॒ क्षमि॑। एता जु॑षत मे॒ गिरः॑।।१८।।

सभी द्वारा दर्शनीय, हमारे अनुग्रहार्थ आविर्भूत वरुण देव को मैंने अवश्य ही देख दिया है। भूमि पर वरुण के रथ को भरपूर मैंने देखा है। स्तुति करने वाले मेरी स्तुति को वरुणदेव ने स्वीकार कर लिया है।

विश्वदर्शतं-सभी द्वारा दर्शनीय या विश्वरूप में दर्शनीय; **क्षमि**-भूमि पर।

२८७. इ॒मं मे॑ वरुण श्रुधी॒ हव॑म॒द्या च॑ मृळय। त्वाम॑व॒स्युरा च॑के।।१९।।

हे वरुणदेव! मेरे इस आह्वान को सुनिये तथा आज के दिन हमें सुखी कीजिए। रक्षा का इच्छुक मैं आप की स्तुति करता हूँ।

अवस्युः-रक्षा का इच्छुक।

दीनबन्धु दीनानाथ 8109201021

Scanned by CamScanner

 दीनबन्धु दीनानाथ 8109201021

२८८. त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि। स यामनि प्रति श्रुधि।।२०।।

हे मेधावी वरुणदेव, आप द्युलोक और भूलोक में सर्वत्र प्रकाशित हो रहे हैं। वह आप क्षेमप्रार्थी या समृद्धि के इच्छुक मेरी स्तुतियों को सुनकर उसका प्रत्युत्तर दीजिए।

मेधिर–मेधावी; **ग्मः**–पृथिवी "ग्मा" (नि० १.१.२); **यामनि**–क्षेम के इच्छुक।

२८९. उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत। अवाधमानि जीवसे।।२१।।

हे वरुणदेव, हमारे शिरोगत पाशों को खोल दीजिए। हमारे उदरगत पाशों को खोलकर नष्ट कर दें तथा जीवित रहने के लिए हमारे पादगत पाशों को भी खींचकर नष्ट कर दें।

मुमुग्धि–मुक्त कर दो; **विचृत्**–अलग करके।

Scanned by CamScanner